धार्मिक जीवन

1. विश्व की प्राचीन समस्त संस्कृतियों की भाँति हड़प्पाकालीन लोगों के जीवन में भी धर्म का महत्वपूर्ण भूमिका रही होगी. प्रस्तुत इस विषय पर हमारी जानकारी बहुत सीमित है और अस्पष्ट भी तथा पूर्णतः समकालीन मुहरों की छापों, मिट्टी और धातुओं की मूर्तियों, समाधि स्थानों आदि पर आधारित है।

2. कालीबंगा में खोजी गयी अग्निवेदियों के अतिरिक्त किसी भी हड़प्पाकालीन स्थल से कोई भी मंदिर या पूजा स्थान अथवा पूजा के लिए प्रयुक्त पदार्थ नहीं मिले हैं। इस सम्बन्ध में हमारे पास जो भी आंशिक जानकारी है उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि हड़प्पाकालीन धार्मिक विश्वासों में परवर्ती हिन्दू धर्म की अनेक विशेषताओं,
जैसे - मातृदेवी, पशुपतिशिव, पवित्र पशुओं, वृक्षों आदि की पूजा शामिल थी

3. मातृदेवी की पूजा →

① सैन्धव काल में मातृदेवी की पूजा को अधिकांश विद्वान स्वीकारते हैं जैसे मार्शल, मार्टीमर व्हीलर, मैके इत्यादी भी करते हैं

(ii) मोहनजोदड़ो से मिली एक पत्थर की मूर्ति से स्त्री के गर्भ से एक पौधा निकलते हुए दिखाया गया है। यह सम्भवतः पृथ्वी देवी की प्रतीक है। इसका सम्बन्ध पौधों के जन्म एवं वृद्धि से रहा होगा। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि हड़प्पा के लोग धरती को उर्वरता की देवी समझते थे और इसकी पूजा उसी तरह करते थे जिस तरह मिस्र के लोग नील नदी की देवी आइसीस / आइसीस की पूजा करते थे लेकिन हड़प्पाई लोग मिस्र वासियों के तरह मातृ सत्यात्मक थे या नहीं इसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता था मिस्र में राजा या सम्राटों के उत्तराधिकारी कन्या होती थी

लेकिन हड़प्पा सभ्यता में उत्तराधिकारी का स्वरूप क्या था हम नहीं जानते

(iii) रवड़ी हड़प्पा में अधिनग्न स्त्रीयों की मिट्टी निर्मित अनेक मुर्तियाँ मिली है जो बाल बंध, हसुली, इत्यादि धारण किए हुए हैं कुछ मुर्तियो पर धुएं के निशान मिले हैं जिससे यह प्रतीत होता है कि देवी को प्रसन्न करने हेतु दीप या धुप जलाए जाते होंगे

(iv) सिन्धु सभ्यता से प्राप्त मातृदेवी की छोटी जैसी मुर्तियां पश्चिमी एशिया के अनेक टेगो से प्राप्त हुए है। इन मुर्तीयों मातृ या प्राकृतिक देवी के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया है।

4 **पशुपति शिव** मोहनजोदड़ो से एक पुरुष देवता की मुर्ति मिली है विद्वान लोग इसे पशुपति शिव बताते हैं पुरुष देवता एक शील पर चित्रित किया गया है। इसका सिर पर तीन सिंग है वह एक योगी के ध्यान मुद्रा में एक टांग पर दुसरी टांग डाले बैठा अर्थात पालथी मार लगाए बैठा दिखाया गया है। इसके चारों ओर एक हाथी एक बाघ और एक गेंडा है। आसन के निचे एक भैंसा है और पावो पर दो हिरण है।

लिंग पूजा

1) हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से अच्छी संख्या में लिंग मिले हैं जो साधारण पत्थर, लाल पत्थर, मिट्टी तथा सीप के बने हैं। कुछ छल्लेचक्राकार पत्थरों के आधार पर Marshall ने यह प्रस्तावित किया है कि ये योनि का प्रतीक है यदि इसे योनी स्वीकार किया जाय तो हम कह सकते हैं कि लिंग के साथ-साथ योनी की भी पूजा होती थी। ऋग्वेद में लिंग पूजा का उल्लेख है जो अनार्य लोग करते थे लेकिन ऋग्वेद में योनी का उल्लेख नहीं है अतः यह भी अनार्य संस्कृति की ही देन थी।

पशुपूजा

1) कुछ विद्वानों का यह विचार है कि इस काल में पशु पूजा होती थी पूजा योग्य पशुओं को तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है —

A– काल्पनिक पशु → ये पशु अर्ध मानव या अर्ध पशु प्राणी है जैसे सुमेरियाई पौराणिक कथाओं में वर्णित ऐबानी या ऐनकिदु नामक श्रृंगयुक्त (सिंग वाले) पशु द्वारा व्याघ्र पर आक्रमण करते हुए दिखाया गया है इसी श्रेणी में ही उन मिश्रित पशुओं का भी उल्लेख किया जाता है जिनके धड़ के साथ विभिन्न पशुओं के सिर जुड़े हुए हैं जो सम्भवतः विभिन्न देवताओं का सामूहिक रूप से विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करने का एक प्रयास था।

B) अस्पष्ट स्वरूप वाले पशु – जो पशु पूर्ण रूप से काल्पनिक नहीं है जैसे एक विचित्र सा एक सिंगी बैल, एक सिंगी पशु इत्यादि।

एक सिंगी बैल की इतनी अधिक मूर्तियां मिली है कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह

नगर परिरक्षक देवता था

7 (i) - वास्तविक पशु → इसमें गेंडे, कुबडदार सांड छोटे सींग वाले बैल इत्यादी शामिल थे -

Note - हड़प्पा कालीन मुहरों पर सबसे अधिक उत्कीर्ण पशु बैल (सांड) है। जो समान्यतः एक सींग से युक्त है।

(ii) गाय जिसे परवर्ती हिन्दु समाज में इतना अधिक पूज्य माना गया है, का सम्पूर्ण हड़प्पा काल में कहीं भी प्रदर्शित नहीं किया गया है।

(iii) अनेक पशुओं के आगे एकपात्र अथवा नाद बना हुआ मिलता है।

(iv) मार्शल का कहना है कि बैल, भैंस, गेंडा, बाघ तथा घड़ियाल इत्यादी शक्तिशाली पशुओं की पूजा शक्ति के प्रतीक के रूप में होती होगी उनका कहना यह भी है कि कालान्तर में विकसित होने वाली गणेश पूजा एवं वराह पूजा इत्यादी को पशु पूजा का ही विकसित स्वरूप माना जाना चाहिये।

8 (i) - नागपूजा

(1) सैन्धव सभ्यता के धार्मिक जीवन में नाग पूजा का भी प्रावधान था। प्रचलन था

(2) मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा पर एक देवता के दोनों ओर नाग दिखलाए गये हैं।

(iii) ~~मोहन जोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा पर~~

(iii) सैन्धव सभ्यता के मृदभांडो पर भी सांप का अंकन मिला है।

(iv) लोथल से प्राप्त मृदभांडो पर दो दो सांपो के चित्र मिले है।

(v) मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक ताबीज पर नाग को एक चबुतरे पर लेटा हुआ दिखाया गया है।

Scanned with CamScanner

9 **वृक्ष पूजा**

(i) सैन्धव सभ्यता से सम्बन्धित मुहरों एवं मृदभांडों पर पिपल बबूल, निम्बु, खजुर, ताड इत्यादी वृक्षों के चित्रण मिले है। मृदभांडों पर केले के पौधा का भी चित्रण मिला है।

(ii) कुछ मुहरों पर पिपल के पेड को रेलिंग से घिरा हुआ दिखाया गया है मोहनजोदडो से प्राप्त एक मोहर पर पिपल के वृक्ष के तने से एक स्त्री को पशुओं का सिर निकलते हुए दिखाया गया है एक अन्य मुद्रा पर एक नग्न देवता को वृक्ष की शाखाओं के मध्य खडा अंकित किया गया है।

10 **जल की पवित्रता**

(i) भारत में नदियों को अत्यंत प्राचीन काल से ही पवित्र माना जाता रहा है। तथा इनकी पुजा की जाती रही है

(ii) मोहनजोदडो के उत्खनन से एक विशाल स्नान कुण्ड मिले है विद्वानो का मानना है कि सिन्धु सभ्यता के लोग जल की पुजा किया करते थे (योगों)

(10) मोहनजोदडो और हडप्पा से तो अग्निकुंडों के साक्ष्य नहीं मिले है किन्तु कालीबंगा और लोथल से इसके स्पष्ट प्रमाण मिले है।

(11) स्वास्तिक, चक्र और क्रॉस के भी साक्ष्य मिले है

(12) अनेक प्रकार के मूर्तियों के मिलने से यह सम्भावना बन जाती है कि हडप्पावासी मुर्ती पुजा करते थे जबकी वैदिक आर्य लोग मुर्ती पुजक नही थे।

(13) ताबीज बडी तादाद में मिले है इससे यह आभास मिलता है कि लोग भुत प्रेत में विश्वास करते थे।

(14) मृतकों का अंतिम संस्कार —

(i) जबतक सिन्धु लिपि का उद्धारण नहीं हो जाता है तबतक यह निश्चित रूप से कहना कठीन है कि सैन्धववासियों का परलोक विषयक मान्यता क्या थी किन्तु इतना स्पष्ट है कि वे अंतिम संस्कार के प्रति पुर्ण रूपेण सजग थे

(ii) हड़प्पा सभ्यता से मृतकों का कोई ऐसा स्मारक प्राप्त नहीं हो सका है जो मिस्र के पिरामिड तथा मेसोपोटामिया के उपनगर के राजकीय कब्रिस्तान के वैभव की बराबरी कर सके तथापि हमें हड़प्पा के लोगों में प्रचलित अंतिम संस्कार पद्धति के विषय में कुछ प्रमाण मिले हैं। शव साधारणतया उत्तर दक्षिण दिशा में रखकर दफनाए जाते थे

(iii) सिंधु सभ्यता में अन्त्येष्टि संस्कार की तीन विधियां प्रचलित थी — [A] पूर्ण समाधिकरण

(B) आंशिक समाधिकरण

(C) - दाह संस्कार

(iv) मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, रोपड़, लोथल, कालीबंगा, सुरकोतदा, सुत्कागेंडोर, इत्यादि स्थानों पर उपर्युक्त अंतिम संस्कारों का वर्णन मिला है जमीन में गड्ढा खोदकर कब्र बनायी जाती थी शव को लिटा दिया जाता था कब्र में बड़ी संख्या में मिट्टी के बर्तन रख दिये जाते थे कुछ स्थानों पर शवों को गहनों जैसे सीप की चूड़ीयां, हार तथा कान की बालियों के साथ दफनाया जाता था। कुछ कब्रों में ताम्बे के दर्पण सीप और सुरमे की सलाइयां भी प्राप्त हुई है।

नोट:— हड़प्पा में एक कब्र में ताबूत (शवरखने वाला)

(v) कालीबंगा में अंतिम संस्कार की भिन्न स्थितियां देखने को मिलती है यहां पर छोटे छोटे वृत्ताकार गड्ढे देखे गये हैं जिनमें बड़ी रखदानीयां तथा मिट्टी के बर्तन मिले हैं लेकिन यहां से कंकालों के अवशेष नहीं मिले हैं कुछ ऐसे भी गड्ढे मिले हैं जिनमें हड्डीयां सम्मिलित मिली हैं।

(vi) Note — (i) रोपड़ में नर कंकाल पश्चिम-पूर्व दिशा में दफनाए हुए मिले हैं

(ii) लोथल में पूर्व पश्चिम दिशा में मानव कंकाल दफनाए हुए मिले हैं

(iii) कालीबंगा में दक्षिण उत्तर दिशा में नर कंकाल दफनाए हुए मिले हैं।

(vii) (iv) अविभिन्न रूप से: एक कब्र में एक ही जोड़े को दफनाया जाता था

Scanned with CamScanner

लेकिन कालीबंगा से एक और लोथल से तीन युग्म समाधियाँ मिली हैं जिसमें एक कब्र के दो-दो कंकाल साथ-साथ दफनाये हुए मिले हैं

नोट:- (i) लोथल के साथ साथ दफनाये गये युग्म समाधि में एक महिला और एक पुरुष का कंकाल मिला है।

(ii) रोपड़ की एक कब्र में मालिक के साथ साथ कुत्ते को भी दफनाया गया था

(iii) लोथल में एक कंकाल के साथ बकरे के सिंग और हड्डियां रखी मिली है।

(iv) मोहनजोदड़ो से कुछ कलश शवधान भी मिले हैं

(vii) मोहनजोदड़ो से 42 मानव कंकाल मिले हैं जो अस्त व्यस्त दशा में मकानों एवं सार्वजनिक मार्गों पर विधिवत अंतिम संस्कार किये बिना मिले हैं। इसमें से कुछ मानव के कंकालों में किसी धारदार हथियार से चोट के निशान हैं

(viii) मोहनजोदड़ो, हड़प्पा तथा लोथल के नर कंकालों के अध्ययन से नृवैज्ञानिकों Anthropologist ने यह मत प्रगट किया है कि सिन्धु-सभ्यता के इन नगरों की जनसंख्या में मिश्रित जाति प्रजाति थी

[A]→ ~~Protostot~~ Proto Austroloid

(B) Medeterreans - (भूमध्यसागरीय)

(C) Allpine

(D) Proto Nordic

(E) Mangoloids

नोट - सबसे श्रेष्ठ एवं मान्य प्रजातीय विश्लेषण S.S. Guha.

निष्कर्ष - इस प्रकार हम देखते हैं कि हड़प्पा काल में जो धार्मिक जीवन रहा होगा वह परवर्ती काल में भी जारी रहा खुदाई से प्राप्त विभिन्न वस्तुओं के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि हड़प्पा सभ्यता के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में कुछ विशेष धार्मिक ~~विधियां~~ भी प्रचलित थी कालीबंगा तथा लोथल में अग्निपूजा प्रचलित थी लेकिन हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो में ऐसा प्रचलन नहीं था

मोहनजोदड़ो में प्रचलित ऐसे पवित्र स्नान की रीति सम्भवतः हड़प्पा में नहीं थी अंतिम संस्कार में भी भिन्नता देखने को मिलती है। अतः व्यापक एक समान होते हुए भी हड़प्पा कालीन धार्मिक जीवन में क्षेत्रीय भिन्नता भी थी।

=